शैक्षिक पंचांग 2021–22

कक्षा–12 कृषि

विषय–शस्यविज्ञान (भाग–2)

कोविड–19 के दृष्टिगत माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित पाठ्यक्रम को लगभग 30 प्रतिशत तक कम करने के पश्चात् शेष पाठ्यक्रम का सत्र 2021–22 हेतु अध्ययनवार मासिक शैक्षिक पंचांग–

क्रम सं0	माह	पाठ्यक्रम
01.	20 मई से	सिंचाई तथा जल निकास, फसलों को पानी की आवश्यकता, जलमान प्रस्ताव एवं उसका मृदा गठन से सम्बन्ध
02.	जून	सिंचाई की प्रजातियां एवं विधिया, भाला विधि, बौछारी विधि, ड्रिल सिंचाई, तोड़ सिंचाई प्रत्येक की लाभ एवं सीमायें सिंचाई की जलमाप वी कटाव हेक्टेयर से0मी0
03.	जुलाई	जल निकास की आवश्यकता, भूमि विकार एवं सुधार दैवी आपदायें–बाढ़, भूकम्प आदि का स्वरूप, संवेदनशील क्षेत्र, हानि नियंत्रण के उपाय
04.	अगस्त	फूलगोभी, गाँठ गोभी, प्याज की खेती का वैज्ञानिक अध्ययन लौकी खेती एवं कद्दू की खेती का वैज्ञानिक अध्ययन
05.	सितम्बर	प्रयोगात्मक–छात्र राजकीय फार्मो तथा किसानों के शाक फार्मो में अध्ययन करने भ्रमणार्थ जायेगे
06.	अक्टूबर	गाजर, मूली, शलजम मटर की खेती का वैज्ञानिक अध्ययन, प्रयोगात्मक कार्य में – एक वर्षीय शाक फसलों की बीज की विभिन्न यन्त्रों द्वारा तैयारी, हाथ तथा बैलो द्वारा यंत्रों द्वारा अंतरकर्षण
07.	नवम्बर	लाल मिर्च की खेती का अध्ययन प्रयोगात्मक–प्रतिचयन विधि से उपज का अनुमान, विभिन्न से सिंचाई तथा सिंचाई की लागत, प्रयोगात्मक परीक्षाओं का आयोजन अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन
08.	दिसम्बर	बैंगन, टमाटर, केला, सेब, लीची, चाय की खेती का अध्ययन प्रयोगात्मक– खाद तथा उर्वरको के शाक फसलों के सन्दर्भ में प्रयोग की विधियां शाक भाजी के बीच तथा खरपातवारों की पहचान
09.	जनवरी	अमरूद, पपीता, गुलाब की खेती का अध्ययन प्रयोगात्मक–शाक–भाजी के मुख्य बीमारियों तथा कीटों की पहचान तथा दवाईयों का घोल बनाना तथा डस्टर एवं स्प्रेयर का प्रयोग

10.	फरवरी	प्री–बोर्ड परीक्षा का आयोजन तथा प्रयोगात्मक परीक्षा का आयोजन
11.	मार्च	बोर्ड परीक्षा का आयोजन

कोविड–19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र 2020–21 में समय से विद्यालयों में पठन–पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी हैः–

शस्य विज्ञान (सिंचाई, जल निकास एवं शाक तथा फल संवर्धन)

1. सिंचाई तथा जल निकास– सिंचाई जल के अपव्यय की रोकथाम, सिंचाई के गुण और उनके प्रभाव।
2. सिंचाई की प्रणालियाँ तथा विधियाँ– उठाव सिंचाई विधि, पट्टी सिंचाई, भराव सिंचाई विधि
3. सिंचाई जल की माप– कुलावा विधि, मीटर माप प्रणाली
4. जल निकास की आवश्यकता– मिट्टी की अति नमी से हानियाँ, क्षारीय मृदा, प्रक्षेत्र प्रबन्ध की सामान्य जानकारी
5. दैवी आपदायें– अनावृष्टि, अतिवृष्टि, उपल वृष्टि
6. शाक तथा फल संवर्द्धन– पत्तगोभी, तुरई की खेती, आडू की खेती, गुलदाबदी, करेला, शकरकन्द, भिन्डी, नींबू, गेंदा, लहसुन, खरबूजा, मशरूम तथा बेर की खेती